

**माँग-फूल** पुं. (देश.) माँग में लगाया जाने वाला एक प्रकार का टीका।

**माँग-भरी** वि. (देश.) सधवा, सुहागिन।

**माँगा** पुं. (तत्.) माँगने विशेषतः मँगनी माँगने की क्रिया या भाव।

**माँगी** स्त्री. (तत्.) धुनियों की धुनकी में वह लकड़ी जो उसकी उस डाँडी के ऊपर लगी रहती है जिस पर ताँत चढ़ाते हैं।

**माँगुर** स्त्री. (तत्.) एक प्रकार की मछली।

**माँच** पुं. (देश.) 1. पाल में हवा लगाने के लिए चलते हुए जहाज का रुख कुछ तिरछा करना 2. पाल के नीचे वाले कोने में बँधा हुआ वह रस्सा जिसकी सहायता से पाल को आगे बढ़कर या पीछे हटाकर हवा के रुख को पता करते हैं।

**माँचना** अ. (देश.) 1. प्रसिद्ध होना 2. लीन होना। उदा. स्याम प्रेम रस माँची।- सूरदास

**माँचा** पुं. (तद्.) 1. पलंग, खाट 2. बैठने की पीढ़ी 3. मचान।

**माँछ** स्त्री. (तद्.) मछली।

**माँज** स्त्री. (देश.) 1. दलदली भूमि 2. कछार, तराई 3. नदी के खिसकने के कारण निकली हुई भूमि।

**माँजना** पुं. (तद्.) 1. कोई चीज अच्छी तरह साफ करने के लिए किसी दूसरी चीज से उसे अच्छी तरह मलना या रगड़ना जैसे- बरतन माँजना 2. जुलाहों का सूत चिकना करने के लिए उस पर सरेस का पानी रगड़ना 3. डोर या नख पर माँझा लगाना 4. कुम्हारों का थपुए के तवे पर पानी देकर उसे ठीक करने के लिए उसके किनारे झुकाना 5. किसी काम या चीज का अभ्यास करना।

**माँजा** पुं. (देश.) पहली वर्षा का फेन जो मछलियों के लिए मादक कहा गया है।

**माँ-जाया** पुं. (देश.) माँ से उत्पन्न, अर्थात् सगा भाई, सहोदर।

**माँजिष्ठ** वि. (तत्.) 1. मजीठ से बना हुआ 2. मजीठ के रंग का 3. मजीठ-संबंधी, मजीठ का

पुं. एक प्रकार का मूत्र रोग या प्रमेह जिसमें मजीठ के रंग का पेशाबा होता है।

**माँझ** अव्य. (तत्.) 1. में 2. भीतर, बीच पुं 1. अंतर, फरक 2. नदी के बीच में निकली हुई रेतीली भूमि।

**माँझा** पुं. (तद्.) 1. नदी के बीच की सूखी जमीन या टापू 2. वृक्ष का तना 3. वे कपड़े जो वर और कन्या को विवाह से पहले पहनाए जाते हैं 4. पगड़ी पर लगाया जाने वाला एक तरह का आभूषण 5. एक प्रकार का ढाँचा जो गोड़ाई के बीच में रहता है और जो पाई को जमीन पर गिरने से रोकता है (देश.) लेई, शीशे की बुकनी आदि का वह रूप जो डोर या नख पर उसे तेज तथा धारदार करने के लिए चढ़ाया जाता है।

**माँझी** पुं. (देश.) केवट, मल्लाह।

**माँट** पुं. (तद्.) 1. मिट्टी का बड़ा बरतन, मटका, कुंडा 2. घर के ऊपर की कोठरी, अटारी, कोठा।

**माँठ** पुं. (तद्.) 1. मटका 2. कुंडा 3. नील घोलने का बड़ा मटका।

**माँठी** स्त्री. (देश.) फूल नामक धातु की ढली हुई एक प्रकार की चूड़ियाँ जो देहाती स्त्रियाँ पहनती हैं स्त्री. मठरी या मट्ठी (पकवान)।

**माँड़** पुं. (तत्.) उबाले या पकाये हुए चावलों में से बाकी बचा हुआ पानी जो गिरा या निकाल दिया जाता है, पसाव, पीच स्त्री. (देश.) 1. माँड़ने की क्रिया या भाव 2. एक प्रकार का राग जिसका प्रचलन राजस्थान में अधिक है 3. एक प्रकार की रोटी उदा. झालर माँड़ आए घिउ पीए -जायसी

**माँड़ना** सं. (तद्.) 1. मर्दन करना, मसलना 2. गूँधना, सानना जैसे- आटा माँड़ना 3. लेप करना, पोतना 4. सजाना या सँवारना 5. अन्न की बालों में से दाने झाड़ना 6. ठानना, किसी प्रकार की क्रिया संपन्न करना अथवा उसका आरंभ करना जैसे- खाते या बही में कोई रकम ठहरना, रुकना।

**माँड़व्य** पुं. (तत्.) 1. एक प्राचीन ऋषि जिनको बाल्यावस्था के किए हुए अपराध के कारण